ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 677-678
www.allresearchjournal.com
Received: 27-10-2015
Accepted: 28-11-2015

नरेश कुमार
गांव अरनियां वाली, जिला –सिरसा हरियाणा।

Correspondence
नरेश कुमार
गांव अरनियां वाली, जिला –सिरसा हरियाणा।

हरियाणावी मध्य कालीन संत साहित्य के दादू पंथ में आध्यात्मिक चिंतन

नरेश कुमार

प्रस्तावना

निर्जरसिन, हरियाणा के संत साहित्य में हरियाणा के दादू पंथ का विशेष महत्व है। दादूपंथी साधुओं को अनेक देश स्थान, वेशभूषा, रहन, सहन, जीवनयापन, उपदेश आदेश प्रचार-प्रसार के ढंगों में विभिन्नता रखने के कारण, उन्हीं विभिन्नताओं के आधार पर छः मुख्य वर्गों में विभक्त किया गया है- यथा खालसा विरक्त, दखनाधा स्थानधारी, उतराधा स्थानधारी, नागा और तपसी[१] इनके शिष्यों में बाबा बनवारी दास, संत हरिदास प्रसिद्ध है। वैसे तो इनकी शिष्य परंपरा अत्यधिक समृद्ध है। इनके शिष्यों का वर्णन गद्दियों समेत निम्नवत् हैः-

केवलदास-रानीला, कनीराम-बुवाणी, हरनाम दास-भिवानी, कल्याण दास-माणकरवास, भगोत दास-गागड़वास, अटलराम-सौभर, मनोहर दास-गूढ़, सहजराम-झज्जर, हेतम दास-तालाब, कांशीराम-धांगड़, धर्मदास-रमतेराम, मालूकदास-उदेशमसर, दयाराम जी-रामराय, परशुराम-मोखरा, मानदास-हरना, नेतराम-पीपलोदा, छतूयोहड़ा, आत्माराम-भैणी, नंदरामजी-कलानौर, चेतराम-बौद्ध, सारंगदास-काहनौर, चरणदास-दूबलधन।

हरिदास जी की रामलीला गद्दी की शिष्य परंपरा इस प्रकर है- हरिदास जी, केवलदास जी, बाबा बिसनदास, हजारीराम बुद्धराय, गुमानदास, मोटराम तथा रामदास।

संत हरिदास की बाणी में साधना संबंधी संकेत पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इसी आधार पर हरियाणवीं दादूपंथी संतों की साधना का स्वरूप तय हुआ है। एक स्थान पर हरिदास जी कहते हैं कि-

'सुरति सुहागन प्रसन्न होकर मंगलराग गा रही है, उसको सतगुरू ने शब्द बतला दिया है और इस विधि से इसी जन्म में प्रिय का साक्षात्कार संभव हो गया है[२]

सतगुरू ने सुरति का शब्द से मेल करवा दिया। इस सुरति-शब्द साधना में सुरति, मन तथा पवन (प्राण) सभी को एक कर त्रिकुटी में ध्यान लगाना पड़ता है। इस ओर संकेत करते हुए हरिदास का कहना है कि मन, पवन तथा सुरति एक होकर तट पर भूल रहे हैं। ५ तत्व २५ प्रकृति स्थित हो गए हैं आध्यात्मिक वाणियां निम्नवत् हैंः-

गुरू महिमाः- गोबिंद बैठा गोप हुय, ज्यों कूंवे में नीर।
गुरू डोरी बिन हरिदास, जल पीवै नहीं बीर।।[३]

(हरिदास)

यह विचार सागर कियो, जायें रत्न अनेक।
गोप्य वेद सिद्धांत तै लहत सविवेक।।[४]

(निश्चलदास)

मेरी माई री अपनो पतिव्रत कीजै।।
कंवल नइन के गुण किन गावै, जब लग जग में जीजै।।[५]

(हरदास)

दादू पंथ में संध्या बदन के दादू जी की 'पंथ' आरती का गायन एक नियम है। आरती का एक इस प्रकार हैः-

इहि विधि आरती राम की कीजै।
आत्मा अंतर वारणा लीजै।।
तनम न चंदन प्रेम की माला। अनहद घंटा दीन दयाला
ज्ञान का दीपक पवन की बाती।
देव निरंजन पांचों पाती आनंद मंगल भाव की सेवा।।
मनसा मंदिर आत्म देवा भक्ति निरंतर मैं बलिहारी।
दादू न जाने सेवा तुम्हारी[५]

संपूर्ण आरती में ऐसे ही ४ ओर पद हैं। दादूपंथी आपस में मिलने पर सत्यराम से अभिवादन करते हैं, जिन्होंने जीव के गर्भ को छुआ व परमतत्व का विवेचन करके उस तक पहुंचने का मार्ग प्रशसत किया।

समता पंथ के जनक का नाम संत मंगतराम जी था। यह पंथ निर्गुण संप्रदाय की आधुनिक कड़ियों में एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। 'श्री समता प्रकाश' ग्रंथ का गौरव-ग्रंथ है, जिसमें महाराज जी की पद्यबंध वाणी हैं। अपने साहित्य में उन्होंने परम पुरूष की प्रार्थना की है दूसरे अंग में 'समदर्शन योग' शीर्षक के अंतर्गत पांच मार्ग (अध्याय/प्रसंग) है। पहले मार्ग में 'सारत नाथ' के अंतर्गत संसार की उत्पत्ति, मुस्लमानी (उत्पति) भेद, सतगुरू के लक्खण, ब्रह्म की पहचान, गुरूमुख, मनमुख पर विचार, सतनाम की असलियत, सच्चा पेम, सत विश्वास यानी यकीने-पाक, सत्पुरूषार्थ यानी साची कौशिश, सत विचार यानी साची सौच, निर्मानता या ओजषी, पर उपकार यानी ने, अपनी वस्तु पर संतोष यानी हक शनासी, प्रेम, यानी मुहस्बत, सादगी, सतसंगत तथा मौद की याद आदि पर विचार किया गया है। दूसरे मार्ग में 'अर्थ विज्ञान यात्रा अरमते' तीसरे मार्ग 'योग चिंतामणि' के अंतर्गत योग द्वारा परमतत्व की प्राप्ति है। चौथे मार्ग में 'विवेक माला' में सतज्ञान विवके का महत्व दिखाया गया है। पांचवें मार्ग 'सतसार प्रकाश' के अंतर्गत आत्म-रूप सत्य की चर्चा है।[६] तीसरा अंग का शीर्षक 'समता स्थित योग' चौथे 'चिरजींव गोष्ठी' जिसमें आध्यात्मिक तत्व विवेचन किया गया है। पांचवा अग 'श्वेतर परबत गोष्ठी' समता सार योग, सातवें में 'विज्ञान योग' का विश्लेषण है।

समतत् या समता तत्व मंगतराम जी की दृष्टि में परमतत्व सत्य अथवा परमतत्व का समशील है।[७] उनका मत है कि सतमत का ज्ञान होने से द्वानंद की प्राप्ति होती है व यम की फांसी से मुक्ति मिल जाती है। समता योग से सब मैल कूच कर जाते हैं, चेतन का चेतन के साथ मेल हो जाता है। समता ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। सारी सृष्टि का आरंभ तथा अंत समतत्व ही है।[८]

समता पंथ की साधना पद्धति भी संतों की पारंपरिक पद्धति सुरत शब्द योग हैं। 'समता विलास' के अनुसार 'समता योग यानी सुरत शब्द की एकता' सिमरन योग का अभ्यास, 'शब्द प्राप्ति यानी ध्यान योग' शब्द में स्थित होना, यही राजयोग हैं। सहजयोग समता का नित नियम है। समता पंथ के पांच मुख्य नियम हैं-सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग, सत सिमरन। उनके आध्यात्मिक चिंतन बिंदू विशेष उल्लेखनीय हैं।

नित ही शब्द समाध में, सुरती भई अडोल
मंगत मिटी सब वासना, सुन सतगुरू वचन अमोल।[९]

सुरति की अंतर्मुख करके नाम जपने तथा शब्द से प्रेम करने से अविगत ज्योति का प्रकट होने का विवेचन भी उपलब्ध होता है। यथाः-

सुरती अंतर कीनी, नाम सिमरन की रसना लीनी।
उपरस जीवन धनी उदासी, अलख, शब्द संग प्रीति बिलासी।।

खेम कुशल तत्र प्रगट पाई, अवगत जोत निरंतर ध्याई।[१०]

संत मंगतराम ने धर्म के स्वरूप का अवगाहन करने को श्रेष्ठ साधन बतलाया है। धर्म की महिमा को निरूपित करते हुए वे कहते हैं:-

तन मन अपना दीजिए, साचे धर्म के मांहि।
मंगत कहे पुकार के, बौहड़ गरम न पाई।[११]

समता पंथ का महामंत्र है

ओइम ब्रह्म सत्यम, निरंकार अजनमा अद्वैत पुरखा सर्वव्यापक कल्याण मूरत परमेश्वराये नमस्तु।[१२] यह मंत्र समता पंथ का मूल मंत्र गुह्य मंत्र तथा महामंत्र कहलाता है। इस मंत्र का महात्मय शाश्वत है। स्वयं संत मंगतराम के

शब्दों में

तिरयोदेश अक्षर मंत्र यह, सरब सिद्ध दातार।
जो सिमरे नित प्रेम से, मंगल पाए अपार।
महिमा सत सरूप की, सब अक्षर पहचान।[१३]
चार वेद और सिमरती, सब का सार निधान।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि समता पंथियों का मूल शब्द 'ब्रह्म सत्यम' उनका ब्रह्म पूर्ण परमेश्वर है। वह अखंड, अवगत, निशबानी तत्व है, हव अजर-अमर, निरंकार, अजन्मा, अगोचर, ओंकार, मुरारी, प्रभु, परमात्मा, आनंद स्वरूप, विशम्भर, सरब अतीत, गोविंद, गुणातीत, सर्वव्यापक, अगम, अगाध, अध्यात्मक व सर्वेसर्वा सृष्टि का एक मात्र संचालनकर्ता ही परमात्मा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. श्री हरिदास वाणी, १५५
2. श्री हरिदास वाणी, पद १५०, पृ. ७५
3. वही, पद २४०, पृ. २२
4. निश्चल दास, विचार सागर, पृ. ३२७-३२८
5. हरदास की वाणी, राग धनाश्री के उदधृत
6. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य- पृ. १७४
7. सूरजभान, हरियाणा का संत-साहित्य, पृ. २५५
8. परमानंद, हसं चेतावनी, पृ. ५६
9. वही, पृ. १०
10. परमानंद, हंस चेतावनी, पृ. १०८
11. वही, पृ. १०६
12. वही, पृ. ११०
13. सूरजभान, हरियाणा का संत-साहित्य, पृ. २५३
14. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य, पृ. २५४